सहारा

कानपुर • शनिवार • 13 जुलाई • 2024

www.rashtriyasahara.com

'पिछेती अरहर की खेती से किसानों को होगा अधिक लाभ'

दलहन के लिये सीएसए के वैज्ञानिक ने जारी की एडवाइजरी

किसानों के लिये एडवाइजरी जारी करने वाले सीएसए के वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश मिश्र।

फोटो : एसएनबी

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश मिश्र ने किसानों के लिये एडवाइजारी जारी करते हुए कहा कि पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती करें, इससे किसान को अधिक लाभ होगा।

डॉ. मिश्र ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसकी मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जुलाई में बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉ. मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा - 343 किलो कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम, फाइबर-15 ग्राम, प्रोटीन-21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1)-0.643 मिलीग्राम, रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं, जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी हैं।

उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9, बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख हैं। अरहर का बीज 15 से 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से, कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम के लिए बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात् 5 ग्राम राइजोबियम 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए।

उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं, तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

ce &
ions with
odaya Bhawan,
, New Delhi-110003
neena13@nic.in
दिनांक 4 जुलाई, 2024
(निदेशक)
भारत सरकार

दैनिक जागरण 13/07/2024

पछेती अरहर की बोआई से खेत और किसान दोनों को फायदा

जासं , कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानियों ने जुलाई में पछेती अरहर बोने का सुझाव किसानों को दिया है। बाजार में अच्छा मूल्य दिलाने वाली इस अरहर के साथ दूसरी सहयोगी फसलों को भी उगाया जा सकता है। इससे किसानों का आर्थिक लाभ बढ़ेगा और खेत की उर्वरा शक्ति भी बढ़ जाएगी।

विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रो. डा. अखिलेश मिश्र ने बताया कि पछेती अरहर की बोआई के लिए जुलाई का महीना सबसे उपयुक्त है। अरहर फसल की खेती के दौरान हवा में मौजूदा 150 से 200 किलोग्राम नाइट्रोजन पौधे की जड़ों में एकत्र हो जाता है। इससे खेत में नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ जाने से किसानों को खाद का इस्तेमाल अगले सालों में भी कम करना पड़ता है। अरहर की उन्नतशील प्रजातियां नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय-13, मालवीय-6 एवं आइपीए- 203 प्रमुख है। अरहर का बीज 15 से 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बोवाई करनी चाहिए।

सत्य का असर समाचार पत्र

13,07, 2024jksingh hardoi agmail com मोबाइल नंबर,9956834016

कानपुर **वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल**

पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती कर लाभ ले किसान*डॉक्टर अखिलेश मिश्रा

वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल
सत्य का असर समाचार पत्र

> चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने *पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती करें किसान होगा अधिक लाभ* विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जुलाई में बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1) -0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए-203 प्रमुख है। अरहर का बीज 15 से 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

195 लखनऊ व एटा से प्रकशित शनिवार, 13 जुलाई 2024 R.N.I. No.: UPHIN/2007/20715 पृष्ठ- 4

पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती कर लाभ ले किसान डॉक्टर अखिलेश मिश्रा

अनवर अशरफ

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती करें किसान होगा अधिक लाभ विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जुलाई में बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट-62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन-21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1) -0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय-6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। अरहर का बीज 15 से 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

केजरीवाल को ईडी केस में जमानत... 12

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पीड़ितों की मदद करने को... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 15 | अंकः 269
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12
शनिवार | 13 जुलाई, 2024

पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती पर जारी की एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश क्रम में शुक्रवार को विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रो. एवं दलहन वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश मिश्रा ने किसानों के लिए पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती करें किसान होगा अधिक लाभ विषय पर एडवाइजरी जारी की । डॉ. मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसकी मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जुलाई में बुवाई की जाती है। उन्होंने

कहा कि अरहर फसल दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। व असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉ. अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से 343 किलो कैलोरी ऊर्जा, कार्बोहाइड्रेट 62.78 ग्राम, फाइबर 15 ग्राम, प्रोटीन 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1) 0.64 3 मिलीग्राम, रिबोफैविविन (बी2)0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते है जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉ. मिश्रा ने किसानों को अरहर की उन्नतशील प्रजातियो जैसे नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 के विषय में बताया । उन्होंने किसानों को अरहर की खेती वैज्ञानिक विधि से करने के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि यदि किसान वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

अंक-133 कानपुर, शनिवार 13 जुलाई 2024 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, महोबा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती कर लाभ ले किसान-डॉक्टर अखिलेश मिश्रा

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती करें किसान होगा अधिक लाभ विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जुलाई में बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1) -0.64 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। अरहर का बीज 15 से 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

वैज्ञानिक विधि से करें अरहर की खेती, बढ़ेगी पैदावार

कानपुर, 12 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह की ओर से वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रो एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती करें किसान होगा अधिक लाभ विषय पर एडवाइजरी किसानों के लिए जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जुलाई में बुवाई की जाती है।

लखनऊ व कानपुर से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 26 अंक : 05 लखनऊ, शनिवार 13 जुलाई 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती कर लाभ ले किसान : डॉ अखिलेश

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने *पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती करें किसान होगा अधिक लाभ* विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जुलाई में बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1) -0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)- 0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम,

मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय-6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। अरहर का बीज 15 से 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती कर लाभ ले किस्सा: डॉ. अखिलेश मिश्रा

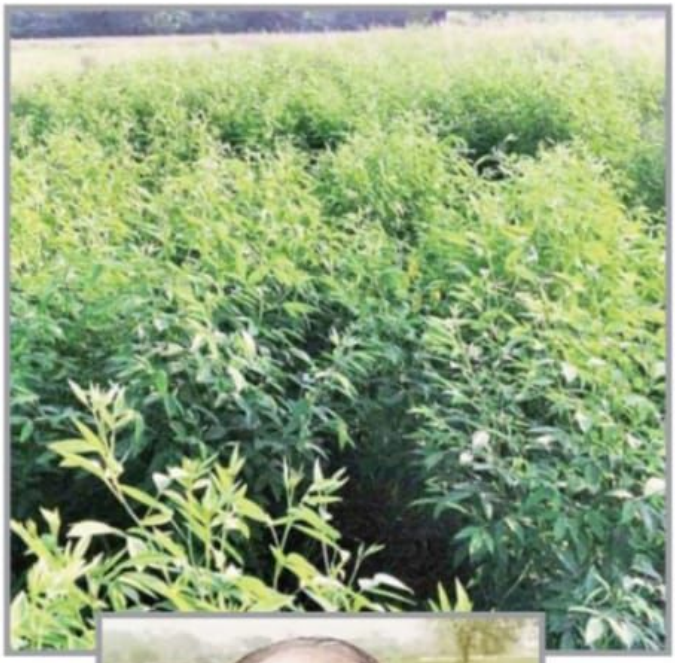

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने पिछेती अरहर की वैज्ञानिक खेती करें किसान होगा अधिक लाभ विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जुलाई में बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1) -0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। अरहर का बीज 15 से 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।